मीठे बच्चे – यह है बेहद की अनलिमिटेड स्टेज, जिसमें तुम आत्मायें पार्ट बजाने के लिए बांधी हुई हो, इसमें हरेक का फिक्स पार्ट है''

प्रश्नः- कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करने का पुरूषार्थ क्या है?

उत्तरः- कर्मातीत बनना है तो पूरा-पूरा सरेन्डर होना पड़े। अपना कुछ नहीं। सब कुछ भूले हुए होंगे तब कर्मातीत बन सकेंगे। जिन्हें धन, दौलत, बच्चे आदि याद आते, वह कर्मातीत बन नहीं सकते इसलिए बाबा कहते मैं हूँ गरीब निवाज़। गरीब बच्चे जल्दी सरेन्डर हो जाते हैं। सहज ही सब कुछ भूल एक बाप की याद में रह सकते हैं।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) जैसे बाप प्यार का सागर है, ऐसे मास्टर प्यार का सागर बन प्यार से काम निकालना है। क्रोध नहीं करना है। क्रोध कोई करे तो तुम्हें शान्त रहना है।

2) बुद्धि से इस पुरानी दु:ख की दुनिया को भूल बेहद का सन्यासी बनना है। शान्तिधाम और सुखधाम को याद करना है। अविनाशी ज्ञान रत्नों की लेन-देन करनी है।

वरदानः- सर्व प्राप्तियों के खजानों को स्मृति स्वरूप बन कार्य में लगाने वाले सदा सन्तुष्ट आत्मा भव

संगमयुग का विशेष वरदान सन्तुष्टता है और सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियां हैं। असन्तुष्टता का बीज स्थूल वा सूक्ष्म अप्राप्ति है। ब्राह्मणों का गायन है अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में। सभी बच्चों को एक द्वारा एक जैसा अखुट खजाना मिलता है। सिर्फ उन प्राप्त हुए खजानों को हर समय कार्य में लगाओ अर्थात् स्मृति स्वरूप बनो। बेहद की प्राप्तियों को हद में परिवर्तन नहीं करो तो सदा सन्तुष्ट रहेंगे।

स्लोगनः- जहाँ निश्चय है वहाँ विजय के तकदीर की लकीर मस्तक पर है ही।